Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2016 = 6.17, www.srjis.com
UGC Approved Sr. No.49366, NOV-DEC 2017, VOL- 4/37

उ0 प्र0 के जनपद इटावा में प्रवसन के निर्धारक तत्व

शिव राज सिंह यादव, Ph. D.

एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, के0 के0 पी0 जी0 कॉलेज, इटावा, उ0 प्र0

Abstract

सामान्यतः बाहर से व्यक्ति अथवा व्यक्तियों का आगमन, अथवा उस समुदाय से व्यक्ति अथवा व्यक्तियों बहिर्गमन को 'प्रवसन' कहा जाता है और उसके (उनके) निवास स्थान में होने वाले परिवर्तन को स्थलीय गतिशीलता कहा जाता है जिसके निम्नांकित तीन आधारः (1) किसी समुदाय की सीमा के अन्तर्गत स्थानीय विचरण अर्थात् कम दूरी का निवास स्थान परिवर्तन (2) किसी राष्ट्र की सीमा के अन्तर्गत एक समुदाय से दूसरे समुदाय में स्थान– परिवर्तन (3) एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र में स्थान परिवर्तन, होते हैं; जिन्हें क्रमशः स्थानीय, आन्तरिक तथा अन्तर्राष्ट्रीय प्रवसन कहते हैं। प्रवसन के कारकों को विभिन्न आधारों– भौगोलिक, ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, आर्थिक, प्राकृतिक, जनांकिकीय, सांस्कृतिक व धार्मिक तथा राजनैतिक के परिप्रेक्ष्य व सन्दर्भो में जाना जा सकता है। मित्र दोस्त व निकट सम्बन्धियों, उज्वल भविष्य के लिए स्व आकांक्षा से, बच्चों के भविष्य के लिए एवं स्वप्रेरणाओं से ग्रामीण अंचलों से नगरीय प्रवास किया है।

पारिभाषिक शब्दः *प्रवसन, भौगोलिक अवकाश, जनसंख्यात्मक गतिशीलता।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

विश्लेषण एवं विवेचनः

''प्रवसन'' की प्रक्रिया तथा प्रवासन भी आधारहीन घटना नहीं होती है। भूगोलविदों द्वारा प्रवसन को प्रायः जनसंख्या के एक भौगोलिक अवकाश से दूसरे भौगोलिक अवकाश को होने वाली परिभ्रमण प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसका प्रमुख आधार भौगोलिक व जनसंख्यात्मक गतिशीलता होता है। इस रूप में जनसंख्यात्मक गतिशीलता का अध्ययन तब तक पूरा नहीं हो सकता जब तक कि ''प्रवसन'' को निर्धारकों के रूप में न समझ लिया जाय। सामान्यतः बाहर से व्यक्ति अथवा व्यक्तियों का आगमन, अथवा उस समुदाय से व्यक्ति अथवा व्यक्तियों बहिर्गमन को 'प्रवसन' कहा जाता है और उसके (उनके) निवास स्थान में होने वाले परिवर्तन को स्थलीय गतिशीलता कहा जाता है जिसके निम्नांकित तीन आधारः (1) किसी समुदाय की सीमा के अन्तर्गत स्थानीय विचरण अर्थात् कम दूरी का निवास स्थान परिवर्तन (2) किसी राष्ट्र की सीमा के अन्तर्गत एक समुदाय से दूसरे

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

समुदाय में स्थान– परिवर्तन (3) एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र में स्थान परिवर्तन, होते हैं; जिन्हें क्रमशः स्थानीय, आन्तरिक तथा अन्तर्राष्ट्रीय प्रवसन कहते हैं। प्रस्तुत शोध–अध्ययन स्थानीय 'प्रवसन' (विचरण) से सम्बन्धित है जिसके आधार में कुछ तत्व/कारक/घटक/निहित अवश्य हैं जो प्रवसन की अवधारणा एवं प्रक्रिया को स्पष्ट रूप से समझने के लिए आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य हैं क्योंकि प्रवसन न केवल भौगोलिक परिवर्तन का लक्षण ही है; अपितु स्वयं भी भौगोलिक परिवर्तन को घठित करता है जिसके आधार प्राकृतिक आपदाएं, क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय समस्यायें होती हैं। इस रूप में 'प्रवसन' बहुआयामी समायोजन की समस्या उत्पन्न करता है; सम्प्रति प्रवासितों को भांति–भांति की नवीन भौगोलिक परिस्थितियों का सामना भी करना पड़ता है। नवीन परिस्थितियों में समायोजित न कर पाने की दशा में वैयक्तिक विघटन की सम्भावनाएं बढ़ जाती हैं। अतः प्रवसन की अवधारणा तथा प्रक्रिया को गहराई से समझने के लिए उसके आधारों तथा निर्धारकों का अध्ययन करना समीचीन है।

प्रवसन को प्रभावित करने वाले तत्वों (घटकों) को जनांकिकी वेत्ताओं, समाजशास्त्रियों तथा भूगोलविदों ने मोटे तौर पर दो वर्गों (भागों)– (क) आकर्षक तत्व (ख) प्रत्याकर्षक तत्व में वर्गीकृत किया है। ऐच्छिक प्रवसन की समस्त घटनाओं को; विभिन्न घटकों के परिणाम के रूप में ग्रहण किया जाता है; परन्तु उल्लेखनीय है कि प्रवसन की घटनाएं केवल हानि–लाभ के आधार पर ही घटित नहीं होती; अपितु प्रवसन के कारकों को विभिन्न आधारों– भौगोलिक, ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, आर्थिक, प्राकृतिक, जनांकिकीय, सांस्कृतिक व धार्मिक तथा राजनैतिक के परिप्रेक्ष्य व सन्दर्भों में जाना जा सकता है।

डेविड एम. हीर[3] (सोसायटी एण्ड पॉपुलेशन; 2002:7) ने लिखा है कि ''प्रवासित व्यक्ति बड़ी–बड़ी महत्वाकांक्षायें लेकर प्रवसन करते हैं तथा वास्तविक व अर्जित उपलब्धियां उससेकहीं कम होती हैं तो इससे मानसिक असन्तोष फैलता है। यदि प्रवासी तथा गैर प्रवासी व्यक्तियों के बीच अन्य अन्तरों को स्थिर भी मान लिया जाय तो यह कहा जा सकता है कि प्रवासियों में मानसिक असन्तोष का दबाव, गैर–प्रवासियों की अपेक्षा अधिक होता है।''

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

डोनाल्ड जे.बोग[4] (प्रिन्सिपल ऑफ डेमोग्राफी : जनसंख्या प्रक्रियाएं – 2009:280) ने लिखा है कि ''पूंजी के नए उद्योगों में विनियोग, व्यवसाय में अवसाद या विस्तार, प्राविधिक ज्ञान में परिवर्तन, आर्थिक संगठनों की संरचना में परिवर्तन, व्यक्तियों की सेवानिवृति, बीमा व स्वास्थ्य सुविधाओं में परिवर्तन, जीवन की दशाओं में परिवर्तन, सरकार की प्रवसन नीति में परिवर्तन आदि घटक (कारक) आन्तरिक प्रवसन को प्रभावित करते हैं तथा दिशा व दर को निर्धारित करते हैं।

इटली के भूगोलविद् वीडाल डी.ला. ब्लास[5] (Principles of Human Geography 2007:203) ने शहरीकरण हेतु प्रवसन को उत्तरदायी कारण माना है एवं लिखा है कि– ''प्रवसन वह प्रक्रिया है जिसमें क्षेत्र विशेषों की जनसंख्या, जीविकोपार्जन के लिए अन्य स्थानों में आकर बसने लगती है।'' जबकि जनांकिकी वेत्ता हंसराज[6] (Fundamentals of Demography : 2011:27) शहरीकरण को मात्र प्रवसन के दृष्टिकोण से रखते हैं क्योंकि शहरों के निर्माण में प्रवसन की भूमिका अहम होती है। आपने शहरों में प्रवासित होने के कारकों में, ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा, चिकित्सा, स्वास्थ्य, मनोरंजन, यातायात, कानून व्यवस्था आदि की सुविधाओं का अभाव कारकों को गांवों से शहरों की ओर प्रवसन हेतु उत्तरदायी माना है।

<u>भौगोलिक व प्राकृतिक कारक</u> :

प्राकृतिक कारकों से भी प्रवासन प्रभावित होता है। प्रायः लोग खराब जलवायु तथा दुर्गम भौगोलिक दशाओं वाले क्षेत्रों से स्वास्थ्यवर्धक जलवायु वाले क्षेत्रों की ओर प्रवासन करते हैं। इसके अतिरिक्त जब प्राकृतिक अवस्थायें कुछ इस प्रकार बदल जाती हैं कि उनमें समायोजन नहीं हो पाता तो पुनः प्रवासन के लिय बाध्यता उत्पन्न हो जाती है। अकाल, दुर्भिक्ष, बाढ़, सूखा, भूचाल आदि ऐसे ही प्राकृतिक घटक हैं जो प्रवासन को आवश्यक बना देते हैं।

अच्छी जलवायु के लालच में भी प्रवास होता रहता है। बीमार व्यक्तियों को प्रायः स्वास्थ्यवर्द्धक जलवायु के प्रदेशों में जा बसने की सलाह दी जाती है। भारत में लोग शिमला, मसूरी, नैनीताल, कश्मीर आदि स्थानों पर तथा स्विट्जरलैंड में विश्व के प्रत्येक कोने से प्रवासी आते रहते हैं। जहां की

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

जलवायु ग्रीष्म व नम हो, शुष्क रेगिस्तानी हो, अत्यधिक शीत या अत्यधिक गर्म हो वहां से व्यक्ति हमेशा बाहर निकलकर सम जलवायु के क्षेत्र में बसना चाहता है। उत्तर प्रदेश के पश्चिमी जिलों में बाहर से आने वाले व्यक्तियों की संख्या यहां से बाहर जाकर बसने वाले व्यक्तियों से कहीं अधिक है, यही कारण है कि यहां जनसंख्या में बड़ी तीव्रता से वृद्धि हो रही है।

प्राकृतिक घटकों के अन्तर्गत खनिजों का पता लगाना, प्राकृतिक प्रकोप, सूखा पड़ना, भूकम्प, ज्वालामुखी या अकाल, बीमारी फैल जाना आदि भी शामिल किये जा सकते हैं। नये खनिजों का पता लगते ही खनिज केन्द्र में जनसंख्या का केन्द्रीयकरण होने लगता है। इसी प्रकार प्राकृतिक प्रकोप में लाखों व्यक्ति बेघर हो जाते हैं तथा भोजन की तलाश में भटकने लगते हैं।

जनांकिकी कारक :

ऐसे स्थानों में जहां जनसंख्या का दबाव अधिक है वहां से प्रायः कम दबाव की ओर जनसंख्या का प्रवाह होता है। प्रवासन जनसंख्या के गुणात्मक पहलू पर भी निर्भर रहती है। एक स्थान पर जहां अधिक लोग हैं किन्तु किसी कार्य विशेष के लिये अकुशल हैं तो कुशल व्यक्तियों को प्रवासित करना आवश्यक हो जाता है।

जन्मदर एवं मृत्युदर भी प्रवासन को प्रभावित करती हैं। यदि पुरूष विशिष्ट जन्मदर कम है तो संतुलन बनाये रखने के लिये बाहर से पुरूषों का आगमन बढ़ेगा। इसके विपरीत यदि स्त्री विशिष्ट जन्मदर कम है, तो स्त्रियों को बाहर जाना होगा। इसी प्रकार जिन स्थानों पर मृत्युदर अधिक होती है वहां से व्यक्तियों का बहिर्गमन अधिक होता है और जिन क्षेत्रों में जन्म दर व मृत्यु दर कम है किन्तु जन्म दर में इतनी अधिक कमी आ गयी है कि भविष्य में श्रम शक्ति के अभाव की समस्या होने वाली है तो ऐसा देश बहिर्गमन को हतोत्साहित करेगा और आगमन को प्रोत्साहित करेगा।

आर्थिक कारक :

सामान्यतः मनुष्य को एक स्थान से दूसरे स्थान जाकर बसने की प्रवृति में आर्थिक कारकों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। कुछ महत्वपूर्ण सामाजिक–आर्थिक कारण (कारक/निर्धारक) इस प्रकार हैंः

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

(अ) भूमि की कमी : प्रायः भूमि के ऊपर जनसंख्या के अधिक दबाव के कारण लोग प्रवसन के लिये बाध्य होते हैं। पूर्व औद्योगिक अवस्था में भूमि की कमी से प्रभावित होकर बड़ी मात्रा में जनसंख्या का प्रवासन हुआ।

(ब) औद्योगीकरण : औद्योगीकरण से भी प्रवसन प्रोत्साहित होता हैं उसके फलस्वरूप पुराने उद्योग विघटित होते हैं और इन उद्योगों में कार्यरत व्यक्तियों को रोजगार की तलाश में नये उद्योगों की ओर प्रवासित होना पड़ता है। इसके अतिरिक्त भूमि की कमी, अपर्याप्त आय, रोजगार का अभाव भी कारक भी ग्रामों से नगरों की ओर होने वाले प्रवासन को प्रोत्साहित करता है।

(स) यातायात की सुविधायें : सुगम, सस्ता व सुरक्षित यातायात की सुविधायें न केवल प्रवासन के लिये प्रेरित करती हैं बल्कि प्रवासन की बारंबारता को भी बढ़ाती हैं और प्रवासन की दिशायें निर्धारित करती हैं।

(द) आर्थिक स्थिति : प्रवासन की प्रक्रिया आर्थिक चक्रो से भी प्रभावित होती है। मंदी के दिनों में लोग प्रवासी होकर उन क्षेत्रों में चले जाते हैं जहां आर्थिक समृद्धि के अवसर अधिक होते हैं। प्रवासन के इतिहास का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि यदि रोजगार पाने व अधिक पैसा कमाने के अवसर सुलभ होते हैं तो लोग कठिनाईयों के बावजूद भी काफी दूर के क्षेत्रों में जाकर रोजी रोटी कमाने के लिए प्रवास करते हैं ताकि जीविकोपार्जन के साथ–साथ आर्थिक स्थिति सुधर सके।

परिकल्पना 1 – (H_1) : ''औद्योगीकरण'', प्रवासन हेतु एक उत्तरदायी निर्धारक कारक है।

यहां पर ''नए व्यवसाय के प्रति लगाव'' को स्वतंत्रचर तथा ''प्रवास के लिए सहायक होना'' को परतंत्र चर मानकर अध्ययन क्षेत्र के सभी 100 प्रवासी सूचनादाताओं से प्राप्त प्राथमिक तथ्यों का सांख्यकीय परीक्षण आकस्मिकता (मूल्य) परीक्षण **(Q)** परीक्षण से प्राप्त तथ्यों की सत्यता व सार्थकता गणना द्वारा आंकी गयी है–

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

तालिका क्रमांक (1) : मूल परीक्षण *(Q)* की गणना

क्रम	औद्योगीकरण प्रवसन का कारण है	प्रवासन में		योग
		सहायक होता है	सहायक नहीं होता	
1	हाँ	**65 A**	**18 B**	**83**
2	नहीं	**10 C**	**7 D**	**17**
	समस्त योग	**75**	**25**	**100**

$$\text{मूल गुणांक } (Q) = \frac{AD - BC}{AD + BC}$$

$$= 0.7534$$

सांख्यकीय परिकलन से मूल गुणांक **(Q)** जिसे आकस्मिकता गुणांक भी कहते हैं; का मान 0.7534 धनात्मक प्राप्त हुआ है। अर्थात् हमारी परिकल्पना सत्य साबित हुई है।

परिकल्पना–2 (H_2) : ''ग्रामीण अंचल का पिछड़ापन'' प्रवासन में वृद्धि करती है अतः प्रवासन के निर्धारक हैं।

यहां पर अपनी मातृभाषा व बोलीचाली वाले क्षेत्र को ''स्वतंत्र चर'' तथा प्रवास में सहायक होना ''परतंत्र चर'' माना गया है।

प्रस्तुत परिकल्पना के सांख्यकीय परीक्षण हेतु सभी 100 सूचनादाताओं से प्राप्त प्राथमिक जानकारी का सत्यापनशीलता आकस्मिकता (मूल) गुणांक **(Q)** परीक्षण का प्रयोग किया है।

तालिका क्रमांक (2) : आकस्मिकता गुणांक *(Q)* परीक्षण

क्रम	ग्रामीण अंचल का पिछड़ापन प्रवासन का निर्धारक है	वृद्धि करता है	अवरोधक है	योग
1	हाँ	**75 A**	**15 B**	**90**
2	नहीं	**05 C**	**05 D**	**10**
	समस्त योग	**80**	**20**	**100**

$$\text{आकस्मिकता (मूल) गुणांक } (Q) = \frac{AD - BC}{AD + BC}$$

$$= 0.67$$

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

क्षेत्रीय अध्ययन के आधार पर प्राप्त प्राथमिक तथ्यों (जानकारी जो सभी 100 प्रवासी सूचनादाताओं के प्रत्यक्ष साक्षात्कारों से संकलित की गयीं; सांख्यकीय परीक्षण से आकस्मिकता (मूल) गुणांक **(Q)** का मान (+) 0.67 प्राप्त हुआ है जो स्वतंत्र तथा परतंत्र चरों के मध्य सकारात्मक सह–सम्बन्ध को दर्शाता है। अतः हमारी परिकल्पना $\mathbf{H_2}$ सार्थक तथा सत्य साबित है।

तालिका क्रमांक (3) : आपने प्रवास किसकी प्रेरणा से किया ?

सूचनादाताओं से प्राप्त प्रत्युत्तर

क्रम	प्रेरणा के स्त्रोत	आवृत्तियाँ	प्रतिशत
1	मित्र/निकट सम्बन्धी	04	04.00
2	उन्नति की आकांक्षा	13	13.00
3	बच्चों के भविष्य	24	24.00
4	विषम परिस्थितियां	37	37.00
5	स्वःप्रेरणा	22	22.00
	समस्त योग	100	100.00

प्रस्तुत तालिका के अन्तर्गत प्रदर्शित तथ्य यह स्पष्ट करते हैं कि 100 प्रवासियों में से 4(4 प्रतिशत) ने मित्र दोस्त व निकट सम्बन्धियों, 13(13 प्रतिशत) ने उज्वल भविष्य के लिए स्व आकांक्षा, 24(24 प्रतिशत) ने बच्चों के भविष्य के लिए, 37(37 प्रतिशत) ने विषम परिस्थितियों तथा 22(22 प्रतिशत) ने स्वप्रेरणाओं से प्रेरित होकर ग्रामीण अंचलों से नगरीय प्रवास किया है।

संदर्भः

Heer David M., Society & Population, Quoted from Vimal Kumar Social Demography, Vivek Prakashan Delhi, 2002, page 7.

Donald J. Bogue; Principles of Demography, 2009, p. 280.

Weedal D.La Blass; Principles of Human Geography, Hindustan Publishing Co., 2007, p. 203.

Hans Raj ; Fundamentals of Demography ; Population Studies withspecial reference to India, Surjeet Publishing Co. Kamla Nagar, Delhi, 2011, p.27.

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies